

---

# Upadeshatmakam Patram

---

## उपदेशात्मकं पत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : Upadeshatmakam Patram 4

File name : upadeshAtmakaMpatram4.itx

Category : misc, shrIdharasvAmI, advice

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Shridharasvami

Proofread by : Manish Gavkar

Description/comments : shrIdharasvAmI stotraratnamAlikA

Latest update : February 11, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



उपदेशात्मकं पत्रम्



(गीतिः रथोद्धता च)

गणपतिरखिलाघहरः पाति गणान्साधनस्य यो मुक्तेः ।  
अवतु स सदाऽप्रमत्तो दत्त्वा त्वां मोक्षसौख्यमतिविश्वम् ॥ १ ॥

शङ्करो भवति यः सुखङ्करो  
जीवदुःखमपनीय सर्वदा ।  
भेदशून्यसुखमद्वयं च यत्  
तत्त्वमेव वदतीह सद्गुरुः ॥ २ ॥

ब्रह्मरूपमति विश्वमतीन्द्रियं  
स्वप्रभं विगतभेदमनुत्तमम् ।  
तत्सदाहमिति निश्चिनु हे हरे  
निर्विकल्पसुखमात्रमगोचरम् ॥ ३ ॥

माया न मायाकार्यं च नाविद्या न तनुर्मनः  
न बन्धो नैव मोक्षश्च ब्रह्मानन्दे स्थिरो भव ॥ ४ ॥

इति श्रीमत परमहंसपरिव्राजकाचार्य सद्गुरु भगवान्  
श्रीधरस्वामीमहाराजविरचितं उपदेशात्मकं पत्रं सम्पूर्णम् ।

आषाढ शुक्ल ४, रचनास्थान श्रीक्षेत्र सज्जनगिरि, संवत्सरः - १९६१

Proofread by Manish Gavkar

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

